Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. V, Issue X, April-2013, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

हरियाणवी लोकसंस्कृति

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. V, Issue X, April-2013, ISSN 2230-7540

हरियाणवो लोकसंस्कृति

Dr. Meenakshi Kajal

Asst. Prof. Hindi CRM Jaat College, Hisar, Haryana

----------X----------

लोक-संस्कृति नदी की धारा के समान है जिसका मूल स्रोत प्राचीन परंपराओं में मिलता है। ये समस्त परंपराएं संस्कारों से सम्पन्न होने के कारण आधुनिककाल तक चली आ रहो हैं। य कालांतर में मूल संस्कृति के साथ अन्य संस्कृतियों का प्रभाव पड़ने के कारण संस्कृतियों के मूल स्वरूप में कुछ परिवर्तन हो जाता है। यह तथ्य हरियाणवी संस्कृति के साथ भी लागू होता है। हरियाणा की संस्कृति मूल रूप में आर्यावर्त या ब्रह्मर्षि देश का खण्ड होने के कारण वैदिक-संस्कृति का ही विकास है।

लोकसंस्कृति अर्थ, परिभाषा, स्वरूप और महत्त्व :

लोकसंस्कृति 'लोक' और 'संस्कृति' दो शब्दों के योग से बना है। 'लोक' शब्द संस्कृत के लुकदर्शने धातु में घञ् प्रत्यय लगाने से निष्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है- देखना अर्थात जो दिखाई देता है, वह लोक है। संस्कृति शब्द की व्युत्पत्ति 'सम्' उपसर्ग पूर्व 'कृ' धातु के भावार्थ में 'क्तिन' प्रत्यय लगाने पर निष्पन्न हुई है। संस्कृति की उत्पत्ति संस्कार शब्द से हुई है। संस्कार से अभिप्राय संशोधन अथवा उत्तम बनाने वाले कार्य से है।

लोक और संस्कृति अन्योन्याश्रित और पूरक हैं। यदि लोक शरीर है, तो संस्कृति उसकी आत्मा है। लोक-संस्कृति समूहगत चेतना का प्रतीक है। इसमें सहिष्णुता की परंपरा और सरलता आदि अनेक ऐसे तत्त्व छिपे हुए हैं, जो अपने समुदाय और समाज को निरंतर बांधते रहे हैं और इन सबसे बढ़कर जिस ओर संकेत करते हैं, वह है सामाजिक सुख-शांति और समृद्धि। लोक-संस्कृति के गीत-संगीत, रीति-रिवाज और उत्सव का प्रतिफलन सुख-शांति और समृद्धि में होता है। समाज को जिस संतोष, स्वास्थ्य, स्वावलम्बन, मर्यादा, उदारता और सदाचार की आवश्यकता होती है, उसका मूल उसकी लोक-संस्कृति है। हरियाणा को भारतीय संस्कृति का हृदयस्थल कहा जाता है। हरियाणवी लोक-संस्कृति के समग्र विश्लेषण के लिए निम्नलिखित बिन्दु आधार मान जा सकते हैं- लोकनृत्य, लोकवाद्य एवं संगीत, लोककलाएं, दिनचर्या और खानपान, वेशभूषा, रीति-रिवाज तथा संस्कार, पर्व, मेले और त्यौहार, खेलकूद, लोकविश्वास और लोकमानस, लोक धर्म, लोकोत्सव, लोकाचार, लोकादर्श, लोकमर्यादाएं, लोकभाषा और लोकसाहित्य।

लोकनत्य :

नृत्य का अर्थ है- लय और ताल के साथ अंग-संचालन करते हुए शरीर की चेष्टाओं द्वारा भाव एवं भंगिमाएं प्रकट करना। नृत्य दो प्रकार के होते हैं- शास्त्रीय नृत्य और लोकनृत्य। लोक में प्रचलित नृत्य लोकनृत्य कहलाते हैं। हरियाणा के लोकनृत्य समस्त समाज के लोकनृत्य हैं किसी जाति विशेष के नहीं। इनकी खूबी लचीलापन है। यह लचीलापन बोल तथा देह की थिरकन में होता है, जो कि पदचाप और शारीरिक कौशल से अभिव्यक्त होता है। इन नृत्यों में सादे जन-जीवन की झलक होती है। इनमें एक स्वाभाविक नियमावली का अनजाने में ही पालन किया जाता रहा है, जो स्वत: स्फूर्त होती रहती है। इनमें आत्मीयता तथा आत्मविभोर करने की अद्‌भुत क्षमता होती है। हरियाणा के लोकनृत्य, स्वास्थ्यवर्धक और मनोरंजक होते हैं। इनकी प्रेरणा-भूमि है खेत-खलिहान, खुले मैदान, तीज-त्यौहार और ऋतु-परिवर्तन। हरियाणा का जन-जीवन लोकनृत्यों से सदा प्रभावित रहा है।

हरियाणा के लोकनृत्यों में लोकसंगीत, लोकगीत एवं पारस्परिक वेशभूषा का सुन्दर समन्वय देखने को मिलता है। इनमें नृत्य के साथ-साथ लोकगीतों की बराबर भागीदारी रहती है तथा परंपरागत लोकवाद्यों- ढोलक, बीन, डमरु, झांझ, मंजीरे, कटोरा, तसला, चिमटा, हारमोनियम, बैंजो, नगाड़ा, शहनाई, ताशा, खजरी, सारंगी, बांसुरी, डफली, घड़वा आदि अवसरानुकूल प्रयुक्त होते हैं। हरियाणवी लोकनृत्यों के सहज पहनावे में पारंपरिक धोती-कुर्ता, जूतियां, पगड़ी धारण करना, कमर पर कपड़ा बांधना आदि आते हैं। नव योवनाएं और महिलाएं घाघरा, कर्ता पहनती हैं और सिर पर चूंदडो ओढ़ती हैं। आभूषणों में कानों के कर्णफूल, सिर पर बोरला, गले में कंठी और हंसली होती है। पैरों में चांदी के आभूषण एवं घुंघरू बंधे होते हैं। हाथों में हथफूल या कंगन आदि।

लोकवाद्य एवं संगीत :

हरियाणा में शास्त्रीय संगीत के साथ-साथ लोकसंगीत की परंपरा प्राचीनकाल से ही चली आ रही है। युग-युगांतर से इसके लोकसंगीत और लोकवाद्यों में अंतर होता आया है। लोकवाद्य के भेद इस प्रकार हैं- तत्तवाद्य, सुषिरवाद्य, अवनध वाद्य और घनवाद्य।

लोककलाएं :

कला उसे कहते हैं, जो जीवात्मा को परमात्मा की ओर ले जाती है। कला की साधना एक प्रकार से ध्यानयोग की साधना है। कोई भी कलाकार चंचल चित्त से कलाओं की साधना नहीं कर सकता। उसके लिए चित्त की एकाग्रता आवश्यक है। एकाग्रता न होने के कारण कला में विकृति उत्पन्न हो जाती है। भारत में कलाओं की बहुत बड़ी संख्या है परंतु 64 कलाएं प्रसिद्ध हैं, जिनमें पांच ललित कलाएं

www.ignited.in

(फाइनआर्टस) अति प्रसिद्ध हैं- वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला, संगीत-कला और काव्यकला। शास्त्रीय और लाककलाओं में विभाजक रेखा खींचना बड़ा कठिन है।

वास्तुकला :

हरियाणा में वास्तुकला का प्रचलन वैदिक काल से ही है। उस काल की कला के अवशेष अब नहीं मिलते हैं। मौर्यकाल, गुप्तकाल, कुषाणकाल, सातवाहन काल, वर्धन-काल और राजपूत-काल मं हरियाणा में वास्तुकला की बड़ी उन्नति हुई, जिसके राजनीतिक और धार्मिक कारण हैं। हरियाणा में प्राचीन राजाओं के महल, तालाब, बावड़ियां वास्तुकला के विशेष नमूने हैं। पिंजौर का पाण्डव मंदिर पाण्डवकालीन माना जाता है। यह मंदिर तकनीक और शैली की दृष्टि से गुप्तकाल से पहले का नहीं जान पड़ता है। इस मंदिर का गर्भ-गृह मौलिक है। इसके स्तंभ सांची के मंदिर डयोढी से मिलते-जुलते हैं। पाण्डवकाल के अन्य अवशेष कम मिलते हैं। पार्वती मंदिर डुडाहेड़ा में है, जो गुड़गांव से दिल्ली जाने वाली सड़क पर स्थित है। उसकी छत समतल है। इसका गर्भगृह पश्चिम की ओर है। इसके चारों ओर परिक्रमा है। वास्तुकला के विकास और अध्ययन की दृष्टि से इसका स्थान हरियाणा क्षेत्र की वास्तुकला में बहुत महत्त्वपूर्ण है।

राधाकृष्ण-मंदिरों की परंपरा ब्रज में मिलती है। हरियाणा ब्रज का निकटवर्ती प्रदेश है। यहां अनेक राधाकृष्ण-मंदिरों का निर्माण हुआ। बेरी का राधाकृष्ण मंदिर बड़ा प्रसिद्ध है। इसके द्वार पर डयोढ़ी बनी है। मंदिर पांच भागों में विभाजित है। गर्भगृह, जगमोहन, दालान, किदरी और थौली। गर्भगृह के चारों और परिक्रमा पद है। राधा और कृष्ण की मूर्तियां संगमरमर से तराशी गई हैं। बहुत से मंदिर और मठों के भग्नावशेष टीलों के नीचे दबे हुए हैं। विदेशी आक्रमणकारियों ने हरियाणा के धार्मिक स्थानों को नष्ट कर दिया था। बेरी में सुप्रसिद्ध परशुराम मंदिर भी है। इस मंदिर में ध्यान देने योग्य बात यह है कि सहन के चारों और के स्तंभ यूनानी वास्तुकला के नमूने हैं। इस मंदिर के गर्भगृह के चारों ओर परिक्रमापद नहीं है। नारनौल में एक प्राचीन जलमहल है, जो वास्तुकला का अद्‌भुत नमूना है। नारनौल में पर्वतीय स्थानों पर अनेक गुफाओं के अवशेष मिलते हैं, जिनमें ढोसी (नारनौल) के पर्वत की गुफाएं दर्शनीय हैं। कुरुक्षेत्र के अनेक मंदिर बड़े पुराने हैं- स्थाणेश्वर महादेव मंदिर, भद्रकाली मंदिर, पाण्डवकालीन माने जाते हैं। युग-युगान्तर में इनका जीर्णोद्धार होता रहा है। यहां पर ब्रह्मसरोवर, सन्निहित सरोवर के निकट अनेक मंदिर हैं, जो वास्तुकला के अच्छे नमूने हैं। कुरुक्षेत्र के 48 कोस के क्षेत्र में अनेक मंदिर, तीर्थघाट और किले हैं, जिनमें कलायत, कैथल, पेहवा, पबनावा, कौल, बसतली, जीन्द, रामरा पिंडारा, ज्योतिसर, थानेसर, अमीन, नरकातारी, दयालपुर, तरावड़ी में पृथ्वीराज का किला प्रमुख हैं। अग्रोहा अग्रसेन महाराज की प्राचीन राजधानी थी, जिसके भवन टीले के रूप में परिवर्तित हो गए। थानेसर वर्धन-वंश की राजधानी रही है। यहां हर्षवर्धन के टीले की खुदाई में प्राचीन वास्तुकला के नमूने मिलते हैं।

मूर्तिकला :

कलाओं में मूर्तिकला का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। मूर्तियां, पत्थर, अष्टधातु, काठ और मिट्‌टी से निर्मित मिलती हैं। मूर्तिकला को वास्तुकला से भी श्रेष्ठ माना जाता है। मूर्तियों में नवरसों का प्रकटीकरण प्रदर्शित किया जा सकता है। मूर्तिकला मानवीय भावों के प्रदर्शन की एक अद्‌भुत कला है, जिसमें कलाकार चेतन भावों का संचार कर देता है। हरियाणा में मंदिरों और मठों में मौर्यकाल से लेकर हर्षवर्धन के समय तक यह क्षेत्र मूर्तिकला के लिए प्रसिद्ध रहा है। कालांतर में विदेशी विध्वंसकारी आक्रमणकारियों ने यहां की मूर्तिकला को नष्ट कर दिया। इसके अवशेष खंडित रूप में मिलते हैं। पिजौंर, कुरुक्षेत्र, पेहवा, सतकुंभा, खोखराकोट (रोहतक) राखीगढ़ी, दौलतपुर (कुरुक्षेत्र), अस्थल बोहर, मोहनवाड़ी, गिरावड़ा आदि ऐसे स्थान हैं, जहां पर प्रथम शताब्दी से 15वीं शताब्दी तक की बनी हुई मूर्तियां खंडित रूप में मिलती हैं।

पिंजौर में कबीर मंदिर के निकट एक पदम सरोवर है, जिसकी पूर्व भित्ति पर चार मूर्तियां हैं। इनमें एक तो त्रिभंग मुद्रा में है और तीन ध्यानी मुद्रा में हैं। कला-कौशल की दृष्टि से ये प्रतिमाएं पूर्व मध्यकालीन लगती हैं। कौरव-पाण्डव धार-मंदिर तथा शिव-मंदिर में कुछ मध्यकालीन मूर्तियां हैं। आधुनिक मूर्तिकला के तत्त्वों के अनुसार ये आधुनिक कलाकारों के लिए बड़ी महत्त्वपूर्ण हैं।

चित्रकला :

चित्रकला, वास्तुकला और मूर्तिकला से अधिक सूक्ष्म है। अनेक रंगों से विभिन्न प्रकार के चित्र बनाए जाते हैं। इसमें रंग और तूलिका का सहारा लिया जाता है। चित्रकला की परंपरा भारत में प्राचीनकाल से रही है। अजंता और एलोरा गुफाओं के भित्ति चित्र विश्व में विख्यात हैं। हरियाणा में भी प्राचीनकाल से हो राजा-महाराजाओं की भित्तियां, दरवाजों तथा स्तंभों पर अनेक चित्र अंकित रहे हैं। 'कादम्बरो' और 'हर्षचरित' इसके प्रमाण हैं। स्थाणेश्वर क महादेव मंदिर के गुंबद में रासलीला की चित्रकला है। बाबा श्रवणनाथ की हवेली (कुरुक्षेत्र) की डयोढी पर अनेक चित्र अंकित हैं। इनके विषय लोकजीवन पर आधारित हैं। रोहतक जिले में मंदिरों और चौपालों में अनेक भित्तिचित्र उपलब्ध हैं। इनके विषय पौराणिक और उपदेशात्मक हैं। बहादुरगढ़, बादली, पिंजौर, गुड़गांव, फिरोजपुर, कुरुक्षेत्र आदि स्थानों पर भित्तिचित्रों के सुंदर नमूने मिलते हैं, जो इसके संकेत हैं कि हरियाणा की चित्रकला अत्यन्त लोकप्रिय थी।

हस्तलिखित ग्रन्थों में भी अनेक प्रकार के रंगीन चित्र हरियाणा में मिलते हैं। 'रामायण', 'महाभारत', 'श्रीमद्‌भगवद्‌गीता' की चित्रावली हस्तलिखित ग्रन्थों में मिलती है। गुरुकुल झज्जर के संग्रहालय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के हस्तलिखित संग्रहालय, धरोहर-संग्रहालय (कुरुक्षेत्र) और श्रीकृष्ण संग्रहालय में हस्तलिखित ग्रन्थों के चित्र उलपब्ध हैं। हरियाणा में कई मठों जैसे कोसली में बाबा मुक्तेश्वरपुरी के मठ में कई ऐसे ग्रन्थ हैं, जिनमें नाथ-पंथ से संबंधित उनकी योगिक मुद्राओं के चित्र पुस्तकाकार रूप में उपलब्ध हं। स्वामी ब्रह्मानन्द-संग्रहालय (कुरुक्षेत्र) में भी हस्तलिखित चित्रों के नमूने मिलते हैं। जैनियों, नाथों, कबीर-पंथी और अन्य सन्त सम्प्रदायों के मंदिरों, मठों में हस्तलिखित ग्रन्थों में चित्र मिलते हैं। यह शोध का विषय है।

लोककला :

www.ignited.in

लोककलाओं का प्रचलन हरियाणा में प्राचीनकाल से ही रहा है। लोककलाओं का मानव-जीवन में गहरा सम्बन्ध रहा है। प्रत्येक क्षेत्र की लोककला अपने हो ढंग की होती है। मनुष्य अपने-व-अपने परिवार के कल्याण, सौभाग्य की सिद्धि के लिए अनेक उपाय करता है। वह उस शक्ति को अनेक रूपों में देखता है और उसे मूर्त या चित्र रूप देने का प्रयत्न करता है। मांगलिक भित्तिचित्रों के माध्यम से भी वह उस शक्ति को साकार स्वरूप प्रदान करके उसकी आराधना करता है। हरियाणा क्या भारत के सभी भूभागों में महल से लेकर झौंपड़ी तक किसी-न-किसी रूप में लोक-कलाओं के दर्शन होते हैं। हरियाणा में अनेक लोककलाएं प्रचलित हैं। वेशभूषा के कपड़ों पर कढ़ाई-सिलाई से चीतणा, फुलकारिता बनाना तथा शरीर पर अनेक आकृतियां गुदवाना हरियाणा में अहोई और बेमाता के मांगलिक भित्तिचित्र प्रसूति के समय पर दीवारों पर बनाए जाते हैं और इन्हे लाल वस्त्र से ढक दिया जाता है।

लोक विश्वास है कि बेमाता छठे दिन शिशु का भाग्य लिखने आती है। श्रावण मास की पूर्णिमा अर्थात रक्षाबंधन के दिन दीवारों पर शकुन सूचक चिह्न अंकित किये जाते हैं। एक मान्यता के अनुसार यह श्रवण कुमार का पूजन है। सरोवर में जल भरते हुए राजा दशरथ के घातक बाण से उसकी मृत्यु हुई थी। उसके मुंह से अन्तिम शब्द राम निकला था।

विवाह आदि मांगलिक अवसरों पर मुख्य दरवाजे के बाहर मांगलिक चीतण या चित्र बनाए जाते हैं। ये चित्र विघ्न-बाधा निवारक माने जाते हैं। इसके अतिरिक्त विभिन्न धार्मिक अवसरों, त्यौहारों-पर्वो के अवसर, देवोठनी ग्यारस (देवोत्थान एकारसी-गयास) दिवाली को लक्ष्मी देवी, गूगानौमी के अवसर पर गूगापीर, दशहरा और नवरात्रे अवसर पर सांझी आदि पर भित्ति चित्र बनाए जाते हैं। ये हरियाणा की लोककला के सुंदर नमूने हैं।

दिनचर्या और खानपान :

लोकजीवन की दिनचर्या बहुत सरल और नित्य नियमित रहती है। हरियाणा के लोग प्रात:काल उठकर शौच आदि से निवृत्त होकर स्नान करके और भगवान का ध्यान करके अपनी आजीविका के लिए खेतों में निकल जाते हैं और सायंकाल घर लौटते हैं। पुरुष पशुओं का चारा डालने, दूध निकालने का काम निपटाते हैं, तो महिलाएं झाड़ू-बुहारी करके आटा पीसना, दूध बिलौना, गोबर उठाना, भोजन तैयार करना, कुएं से पानी भरना है। इस प्रकार पुरुष और महिलाएं अपनी दिनचर्या में व्यस्त रहते हैं। महिलाएं घर भी संभालती हैं आर खेतों में पुरुषों की सहायता भी करती हैं। इनका काम दोहरा है। महिलाएं घर में कपड़े सीलना, चरखा कातना आदि काम भी करती हैं। वे घर के लिए ईंधन इक्ट्ठा करने के कार्य भी करती हैं। पुरुष रात को चौपाल या बैठकों में बैठकर हुक्का गुड़गुड़ाते हैं। लोक मनोरंजन में भजन-कीर्तन भी करते हैं। आधुनिक जीवन विज्ञान और तकनीक का युग है।

हरियाणा के लोगों की आजीविका का साधन मुख्यत: कृषि है। परिश्रमी होने के कारण यहां के लोग स्वस्थ और बलिष्ठ हैं। यहां खानपान को बहुत महत्त्व दिया जाता है, क्योंकि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन निवास करता है। ऐसी लोगों की मान्यता है। यहां के लोगों का अधिकतर भोजन सात्विक है, जो बलवर्धक होता है। हरियाणा में प्रसिद्ध लोकोक्ति है- देसां में देश हरियाणा जित दूध दही का खाणा। यहां के लोगों की धारणा है कि मोटा खाना और मोटा पहनना अच्छे जीवन का लक्ष्य है। हरियाणा दुधारु गाय-भैंसों के लिए सारे भारत में प्रसिद्ध है। इस प्रदेश में सर्वाधिक दूध होता है। यहां की एक कहावत है- रज के खा और दब के बाह। हरियाणा हरा-भरा प्रदेश है। इसमें फलदार वृक्ष और हरी सब्जियां बहुतायत में होती रही हैं। ग्रामीण-जीवन का खान-पान ज्यों-का-त्यों बना हुआ है।

हरियाणा के लोग मीठा खाने के शौकीन हैं। इससे शारीरिक शक्ति बढ़ती है। गुड़ का प्रयोग आज भी पूर्ववत है। यहां अनेक अवसरों पर मिठाइयों का प्रयोग होता है। यहां परम्परागत खानपान में मिस्सी और बाजरे की रोटो, खिचड़ी, दलिया, चूरमा खाया जाता है। विशेष अवसरों पर हलवा-खीर-पूड़े, गुलगुले, सवाली, लड्डू-जलेबी आदि खाते हैं। नई पीढ़ी परंपरागत भोजना को छोड़कर फास्ट फूड आदि की ओर आकर्षित हो रही है। समय के परिवर्तन के साथ-साथ परंपरागत दिनचर्या और खानपान में परिवर्तन होता जा रहा है। वैज्ञानिक और तकनीकी प्रभाव ने दिनचर्या को प्रभावित किया है। अब तो दिनचर्या में मोबाइल और खानपान में चायपान नियमित हो गए हैं। युवा पीढ़ी नशे की ओर बढ़ रही है, जो समाज के लिए अत्यन्त हानिकारक है।

रीति-रिवाज तथा संस्कार :

मानव समाज और पशु जगत में केवल यही अंतर है कि मानव समाज का परिचालन कुछ नियमों, कानूनों और रीति-रिवाजों के अनुसार होता है। पशु जगत में न कोई रीति है न कोई रिवाज। उनकी सभी क्रियाएं प्रकृति द्वारा संचालित हैं। मानव सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है और विवेकशील है। इसीलिए वह एक सामाजिक प्राणी भी है। समाज के बिना व्यक्ति का कोई अस्तित्व नहीं है। अत: आदिम समाज के कुछ नियम थे और पिछड़े समाज के भी कुछ नियम होते हैं। उन्नत और प्रगतिशील समाज के कुछ नियम होते हैं। दूसरे शब्दों में जिसे रीति-रिवाज कहते हैं। सामाजिक जीवन के अस्तित्व के लिए रीति-रिवाजों का होना आवश्यक है।

प्रत्येक देश-समाज और काल के रीति-रिवाजों में अंतर हो सकता है। उनके अनुपालन में भी अंतर हो सकता है। भारत का ही नहीं संसार के किसी भी देश के समाज के मूलाधार रीति-रिवाज हैं। इसीलिए युग-युगान्तर से हरियाणवी समाज भी रीति-रिवाज के बंधनों में बंधा हुआ है।

संस्कार शास्त्रानुमोदित हैं, जबकि रीति-रिवाज समाज द्वारा निर्मित हैं। दोनों का बड़ा घनिष्ट सम्बंध है। हिन्दू शास्त्रों में 16 संस्कारों का विधान है परंतु समाज में व्यावहारिक रूप में सभी का पालन नहों किया जाता है। प्रमुखत: तीन संस्कार समाज में प्रचलित हैं- जन्म-संस्कार, विवाह

और अंत्यष्टि-संस्कार। हरियाणा में प्रचलित रीति-रिवाज तथा संस्कार कुछ इस प्रकार हैं-

1. जाति-बिरादरी में विवाह संबंध का रिवाज तथा समान गौत्र में विवाह संबंध का निषेध।

2. जन्म-संस्कार में न्हाणवार, छठी, हवन, रतजगा, जलवा पूजन, कुआ-पूजन, नामकरण, यज्ञोपवीत, आखद घालणा, जच्चा का भोजन आदि।

3. विवाह-संस्कार में विवाह की चिट्ठी, बान, मंढा, भात लेना, बारात, न्यौता लेना-देना, फेरे, विवाह के समय की प्रतिज्ञाएं, कन्यादान, समधी मिलावा,गांव और गोत्र की बहनों का सम्मान, विदाइ और छापा-थापा आदि रीति-रिवाज।

4. तीज-त्यौहारों पर कोथली, सिंधारा, छुछक देना।

5. ब्राह्मण (विद्वान) का विशेष सम्मान।

6. गो-महिमा का पालन करना।

7. अतिथि-सेवा का निर्वाह करना।

8. साधु-संतों और फकीरों का आदर करना।

9. श्राद्ध तर्पण करना।

10. पिता द्वारा बेटी के घर का अन्न-जल ग्रहण न करना।

11. अंत्येष्टि संस्कार में अस्थि-विसर्जन, पिण्डदान, मृत्युभोज आदि का विधान।

रीति-रिवाज हो या संस्कार उनका मूलाधार धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रथाएं या परंपराएं हैं। जिस प्रकार समाज परिवर्तनशील है, उसी प्रकार कुछ रीति-रिवाजों और संस्कारों में भी परिवर्तन हो जाता है। रीति-रिवाजों और संस्कारों की उपादेयता निर्विवाद है। प्रारंभ में ही कहा जा चुका है कि इनके बिना मानव-समाज का संचालन संभव नहीं है। इनके परित्याग करने पर मानव-समाज में विघटन और अराजकता की स्थिति उत्पन्न हो जाएगी। रीति-रिवाज तथा संस्कार नियम और कानून, व्यक्ति और समाज को एक दूसरे के साथ जोड़े रखते हैं। सामाजिक नियमों का बहिष्कार करने पर व्यक्ति स्वयं ही बहिष्कृत हो जाता है। जब हम इनका पालन करते हैं, तो समाज का संचालन सुचारु रूप से होता है। अत: इनका पालन मानव-समाज के हित में है।

हरियाणा के लोकजीवन में अनेक रीति-रिवाज प्रचलित हैं। शहरी-ग्रामीण, शिक्षित-अशिक्षित, स्त्री-पुरुष सभी इनका पालन करते हैं। पंचायतें इनके परिपालन के लिए ध्यान देती हैं।

पर्व, मेले और त्यौहार :

हरियाणा राज्य भारत देश का एक अभिन्न अंग है, जो पर्व और त्यौहार सारे देश में मनाए जाते हैं। हरियाणावासी भी उनमें बड़े चाव से भाग लेते हैं। हरियाणा में अंतर्राष्ट्रीय स्तर का पर्व सूर्यग्रहण प्राचीन काल से ही प्रचलित है। जब सूर्यग्रहण होता है और कुरुक्षेत्र में दिखाई देता है, तब यह पर्व मनाया जाता है। सूर्यग्रहण के मेले पर देश-विदेश से अनेक तीर्थयात्री आते हैं। कुरुक्षेत्र में सोमवती अमावस्या को विशेष पर्व का आयोजन होता है। इस पर्व पर भक्तजन यज्ञ, पूजा-पाठ और दान-स्नान करते हैं। श्राद्धों के अवसर पर सोमवती अमावस को फलक ऋषि की तपोस्थली फल्गु तीर्थ पर पहुंच भक्तजन पिण्डदान करते हैं, जिसे गया जी के समान पुण्य स्थली माना जाता है। हरियाणा में गुरु-पूर्णिमा पर्व भी बड़ी धूमधाम से मनाया जाने लगा है, जिसे व्यास-पूर्णिमा भी कहते हैं।

मेलों के मुख्यत: दो रूप होते हैं- किसी देवी-देवता, संत-महात्मा आदि की स्मृति में आयोजित किये जाते हैं। जहां धार्मिक अनुष्ठान के साथ-कुश्ती-कबड्डो आदि खेलकूद के दंगल लगते हैं। दूसरे प्रकार के व्यापारिक मेले होते हैं, जहां गुड़-शक्कर, चीनी, खानपान की चीजें और पशुओं के खरीदने-बेचने के मेले लगते हैं। इन्हें पीठ कहते हैं। ये मेले साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक और वार्षिक भी होते हैं। व्यापारिक मेलों के अन्तर्गत अब पुस्तक मेले भी लगने लगे हैं हरियाणा में इस तरह के अनेक मेले लगते हैं। इन मेलों में लोककला, नृत्य, संगीत, नाटक, सांग आदि को प्रात्साहन मिलता है। भजनीक और उपदेशक इन मेलों में पहुंचकर लोगों का मनोरंजन करते हैं और सदुपदेश देते हैं। इन मेलों में बड़े-बड़े भंडारे-लंगर लगते हैं। उदाहरण के लिए प्रमुख मेले हैं- रामरा-पिण्डारा, पेहवा में चैत्र-चौदस मेला, अमीन में छठ का मेला, हथीरा में बाला सुन्दरी का मेला, काम्यक वन (कमोदा) मेला, अमुपुर (करनाल) में गूगापीर का मेला, कपालमोचन का मेला, लाडवा में देवी का मेला, कुरुक्षेत्र में सूर्यग्रहण मेला, बावनद्वादसी का मेला और फरल में फल्गु मेला।

जनसंख्या वृद्धि, वैज्ञानिक साधनों दूरदर्शन आदि के कारण पर्व, मेले और त्यौहारों का महत्त्व दिन दुना रात चौगुना बढ़ रहा है। जहां एक ओर इनका उज्वल पक्ष है, वहां दूसरी ओर कहीं-कहीं इन अवसरों पर समाज में कुछ बुराइयां भो पनपती हैं। अधिकांश पर्व, मेले और त्यौहार हरियाणा में बड़ी धूमधाम और हर्षोल्लास से मनाए जाते हैं। ये तो प्रकृति से संबंधित होने के कारण समाज के कल्याण के लिए बने हैं। इसीलिए इनका महत्त्व वैश्वीकरण के दौर में भी अक्षुण्य है। ये मानव जाति की प्रसन्नता के अवसर हैं। आजकल सरकारी स्तर पर भी गीता जयंती (कुरुक्षेत्र) और हस्तशिल्प मेला (सूरजकुंड) लोगों में आकर्षण का केंद्र बने हुए हैं। इनका धार्मिक और सांस्कृतिक महत्त्व तो है ही। इनसे आर्थिक लाभ भी होता है। इन अवसरों से कलाकारों और दस्तकारों को उनकी कलाकृतियों के लिए प्रोत्साहन भी मिलता है। इससे तो लोककलाओं को प्रश्रय प्रदान किया जाता है ताकि ये परंपरागत कलाएं आधुनिक भौतिकवाद की चमक-दमक में विलुप्त न हो जाएं।

www.ignited.in